JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का हिंदी साहित्य में योगदान

पुष्पा कुमारी

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म 21 फरवरी 1896 को बंगाल की महिषादल रियासत (जिला मेदिनीपुर) में हुआ। 'महाप्राण' नाम से विख्यात निराला छायावादी दौर के चार स्तंभों में से एक है। निराला एक कवि, उपन्यासकार, कहानीकार और निबंधकार थे। निराला के विविध प्रयोगों छंद, भाषा, शैली, भाव संबंधित नव्यतर दृष्टिओं ने नवीन काव्य को दिशा देने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान दिया। बतौर अनुवादक भी सक्रिय रहे। निराला का व्यक्तित्व घनघोर सिद्धांतवादी और साहसी था। उनका व्यक्तित्व अतिशय विद्रोही और क्रांतिकारी तत्वों से निर्मित हुआ है। उसके कारण वे एक और जहां अनेक क्रांतिकारी परिवर्तनों के सृष्टा हुए, वहीं दूसरी ओर परम्पराभ्यासी हिंदी काव्य प्रेमियों द्वारा अरसे तक सबसे अधिक गलत भी समझे गए। हिंदी साहित्य संसार में उनके आक्रोश और विद्रोह, उनकी करुणा और प्रतिबद्धता की कई मिसालें और कहानियां प्रचलित है। उनके जीवन का उतरार्द्ध इलाहाबाद में ही बीता। **वहीं** दारागंज नाम के मोहल्ले में 15 अक्टूबर 1961 को उनका देहावसान हुआ।

जीवन परिचय

महाकवि, महामानव और महाप्राण जैसे विरुदो से सम्मानित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' वास्तव में अपने नाम के ही अनुरूप निराले रचनाकार थे। वे हिंदी साहित्यकाश के सबसे देदीप्यमान नक्षत्रों

में से एक थे । उनका जन्म उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले के मूलनिवासी पंडित रामसहाय त्रिपाठी के घर 21 फरवरी 1896 में हुआ जो उस समय मोदिनीपुर के राजा के **नौकरी** कर रहे थे । उनकी माता जी का देहांत बचपन में ही हो गया था जब वह 3 साल के थे । उनका प्रारंभिक नाम सूरज कुमार था । उनकी प्रारंभिक शिक्षा बंगाल में एक स्कूल में हुई और बंगाल से ही उन्होंने हाई स्कूल की शिक्षा प्राप्त की । इसके बाद निराला ने हिंदी, संस्कृत और बंगला आदि भाषाओ का अध्ययन किया । जब निराला 20 साल के हुए तब उनके पिताजी का देहांत हो गया । समय के चलते प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान एक ऐसी महामारी फैली, जिसके दौरान उनकी पत्नी मनोहरादेवी सहित उनके परिवार के कुछ और सदस्यो की भी मृत्यु हो गयी । शुरुआती दिनों में वे महिषादल रियासत में **नौकरी** करने लगे, परन्तु यह नोकरी निराला के जीवन यापन के लिए कम थी ।

निराला का शेष जीवन बहुत ही कष्टकारी आर्थिक मंदी के साथ गुजरा, फिर भी उन्होंने कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अपने सिद्धांत का साथ कभी नहीं छोड़ा । महिषादल रियासत में नौकरी करने के बाद उन्होंने बंगाल छोड़ दिया और लखनऊ आ गए । यहां पर वह कुछ समय गुजारने के बाद इलाहाबाद के दारागंज मोहल्ले में आकर रहने लगे । **जहॉ** उनके जीवन का अधिकांश समय गुजरा । उन्होंने विभिन्न प्रकाशनों में प्रूफ रीडर के तौर पर काम और ‘समन्वय’ नामक पत्रिका का सम्पादन भी किया । अपने विरोधी स्वभाव तथा अपारंपरिक लेखन के कारण सृजनकर्म से उन्हें कभी पर्याप्त आमदनी नहीं हुई । उनकी एक पुत्री सरोज थी ।

शादी के 1 वर्ष बाद सरोज की मृत्यु हो गई, फिर ‘सरोजस्मृति’ नामक कविता अस्तित्व में आई जो हिंदी का अब तक का सर्वश्रेष्ठ शोकगीत माना जाता है । कुछ पंक्तियां प्रस्तुत है-

मुझ भाग्यहीन की तू सम्बल

युग वर्ष बाद जब हुई विकलए

दुख ही जीवन की कथा रहीए

क्या कहूँ आजए जो नहिं कही !

हो इसी कर्म पर वज्रपात

यदि धर्मए रहे नत सदा माथ

इस पथ परए मेरे कार्य सकल

हो भ्रष्ट शीत के-से शतदल !

कन्ये, गत कर्मो का अर्पण

करए करता मैं तेरा तर्पण !

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की प्रमुख कृतियां

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला छायावादी युग के प्रमुख कवि थे। उन्होंने अनेक प्रकार के काव्य **संग्रहों** को प्रकाशित किया। उनकी रचनाओं में कहीं प्रेम, कहीं आध्यात्मिकता, कही विपन्नो के प्रति सहानुभूति व संवेदना, कहीं देश प्रेम का जज्बा, कहीं सामाजिक रूढियों का विरोध एवं कहीं प्रकृति के प्रति झलकता अनुराग मिलता है। इलाहाबाद में पत्थर तोड़ती महिला पर लिखी उनकी कविता आज भी सामाजिक यथार्थ का एक आईना है, जो निम्न है-

वह तोड़ती पत्थर

देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर

वह तोड़ती पत्थर

कोई न छायादार पेड़

वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार

श्याम तन भर बंधा योवन

नत ए नयन प्रियए कर्म-रत मन

गुरु हथौडा हाथ

करती बार बार प्रहार

सामने तरु.मालिका अट्टालिका प्रहार

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य संग्रह

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने वर्ष 1923 में अपनी प्रथम कविता संग्रह को अनामिका नाम से प्रकाशित किया । उनका प्रथम निबंध बंग भाषा में सरस्वती पत्रिका के द्वारा प्रकाशित हुआ । वर्ष 1922 ईस्वी में निराला ने महिषादल की नौकरी को त्याग दिया और उसके बाद स्वतंत्र रूप से लेखन करने लगे । वर्ष 1923 में प्रकाशित होने वाली 'समन्वय' का संपादन भी निराला ने ही किया । इसके बाद 'मतवाला' को वर्ष 1923 में एक टीम के साथ मिलकर के संपादित किया । लखनऊ से उन्होंने 'गंगा पुस्तक माला' के प्रकाशन में भी काम किया । इसके बाद वे इलाहाबाद चले गये जहाँ पर वे स्वतंत्र रचना करने लगे । उनके काव्य काव्यसंग्रह निम्न है- अनामिका, परिमल, गीतिका, द्वितीय अनामिका तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते, अर्चनाए आराधनाए गीत कुंज, सांध्यकाकलीए अपरा ।

उपन्यास

अप्सराए अलकाए प्रभावती, निरूपमाए कुल्ली भाटए बिल्लेसुर बकरिहा ।

कहानी संग्रह

लिली, चतुरी चमार, सुकुल की बीवी, सखी, देवी ।

निबंध

रवीन्द्र कविता कानन, प्रबंध प्रतिमा, चाबुक, चयन संग्रह ।

पुराण कथा- महाभारत ।

अनुवाद- आनंद मठए विष वृक्षए कृष्णकांत का वसीयतनामाए कपालकुंडला, दुर्गेश नन्दिनी, राज सिंह ,राजरानी, देवी चौधरानीए युगलांगुल्य, चंद्रशेखर, रजनी, श्री रामकृष्ण वचनामृतए भरत में विवेकानंद तथा राजयोग का बांग्ला से हिंदी में अनुवाद ।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की मृत्यु

हिंदी साहित्य के छायावादी युग के प्रमुख कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के जीवन का अंतिम समय प्रयागराज के दारागंज नामक मोहल्ले में एक छोटे से कमरे में व्यतीत हुआ था । सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की मृत्यु इसी कमरे में 15 अक्टूबर 1961 को हुई थी । मुक्ति की उत्कट आकांक्षा उनको सदैव बेचैन करती रही, तभी तो उन्होंने लिखा-

तोड़ो, तोड़ो, तोड़ो कारा

पत्थर की निकलो फिर गंगा-जलधरा

गृह-गृह की पार्वती

पुनः सत्य-सुंदर-शिव को सँवारती

उर-उर की बनो आरती

भ्रांन्तो की निश्चल ध्रुवतारा

तोड़ोए तोड़ोए तोड़ोए कारा ।

निष्कर्ष

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला वास्तव में ओजए औदात्य एवं विद्रोह के कवि है । निराला अकुंठ एवं वयस्क श्रृंगार दृष्टि तथा तृप्ति के कवि है स वे सुख और दुख दोनों को भरपूर देखकर तथा उससे ऊपर उठकर चित्रण करने की क्षमता रखते हैं स निराला के काव्य में आध्यात्मिकता, दार्शनिकता .रहस्यवाद और जीवन के गूढ़ पक्षों की झलक मिलती है । निराला गलित रूढ़ियों के विरोधी तथा संस्कृति के युगानुरूप पक्षों के उदघाटक और पोषक रहे हैं ।

निराला में प्रारंभ से ही छायावाद के साथ साथ सरल और बोलचाल की भाषा में जीवन के विषय-यथार्थ को अभिव्यक्त करने की प्रवृत्ति रही है । यह महत्व निराला को ही प्राप्त है कि नई हिंदी कविता की सभी प्रवृतियो के कवि अपना संबंध निराला से जोड़ने मे गौरव का अनुभव करते हैं । उनकी अधिकांश रचनाओं में भाषा तत्सम बहुल है और उसमें समासो की अधिकता है । परंतु कुछ प्रगतिवादी रचनायें आम बोलचाल की भाषा में भी काव्यबद्ध हुई है । इससे यह तो पता चलता है कि भाषा के विविध रूपों पर उनका समान अधिकार था ।

संदर्भ सूची

1 श्रुतिकान्त पाण्डेय, ''हिंदी भाषा और इसकी शिक्षण **विधियॉ** हिंदी भाषा और शिक्षण विधियों की परिचायक'', पृष्ठ 37

2 डॉ राकेश कुमार द्विवेदीएष्आधुनिक काल में कवित्त ओर सवैयाष्, पृष्ठ 351

3 सूर्यनारायण वर्माएष्छायावादी और भाववादी काव्य में प्रकृति चित्रणष्, पृष्ठ 24

4 रजनी कान्ता पांडेय,''कबीर एवं निराला के काव्य में विद्रोह चेतना'' , पृष्ठ 238

5 kavitakosh.org/.../ सूर्यकान्त_त्रिपाठी_%22 निराला %